

सारिका मौर्या
चिनहट, लखनऊ

शिव जी का पार्वती जी को समझाना कि प्रेम क्या है?



मोह का त्याग, समर्पण की भावना प्रेम है,
तुम्हें मुस्कुराता देख , मेरा मुस्कुराना प्रेम है।
प्रेम किसी से ईर्ष्या नहीं रखता ,
प्रेम में विश्वास की भावना प्रेम है।
जब किसी विपदा में हो, तो बात कर लेना
क्योंकि समय के साथ समस्या को सुझलाना, प्रेम है।
जब लगे मन भारी तो , संचार करना
हर परिस्थिति में मुझसे विचार करना
और विचार करके साथ में, हल निकालना ही प्रेम है।
तेरा विलास्ता त्याग , मेरे साथ कैलाश पर आना
और मेरी स्तर को अपनाना प्रेम है।
प्रेम विचार है स्वतंत्रता का, प्रेम में अधिकार रखना प्रेम है।
पर प्रेम में वर्चस्व होना, प्रेम नही, प्रेम में परिस्थिति संभालना प्रेम है।
तेरे जीवन के सारे कष्ट मेरे और सारे सुख तेरे
तेरा मेरे जीवन शैली को अपनाना प्रेम है।

तुम्हारा पास न होकर भी पास होना, तेरा मुझको हर पल आभास होना
मेरा देवों सा पवित्र रिश्ता तुझसे और तेरा, मेरे प्रेम में सती हो जाना प्रेम है।

तुम्हारा सती होने पर मेरा अस्तित्व नष्ट हो जाना,
फिर तुम्हारा पार्वती बनकर जन्म लेना, और मुझे पुनर्जन्म देना ही प्रेम है।

जब मैं अनभिज्ञ था अपने परिचय से तो मेरी शक्तियों का मुझे एहसास कराना

और मुझे अंधेरे से उजियारे में लाना प्रेम है।
मेरे निरर्थक और निराधार जीवन में, मेरे दुखों को बांटना ,
और मेरे चेहरे पर मुस्कान लाना ही प्रेम है।
मेरे हृदय की बिरह को शांत कर
मुझे सृष्टि के कल्याण में उलझाना प्रेम है।
तुम्हारे अभाव में मेरा अपूर्ण होना ,
फिर तुम्हारा पार्वती बन मुझे पूर्ण करना ही प्रेम है।